नोट्स

B.A. Part-III (Hon's)
Subject — Geography
Paper — VI

Unit — I

Q. नगरीय भूगोल की परिभाषा दे? और इसके क्षेत्रों का वर्णन करें?

नगरीय भूगोल अंग्रेजी भाषा के 'अरबन ज्योग्राफी' (Urban Geography) शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। अंग्रेजी का 'अरबन' (Urban) शब्द लैटिन भाषा के 'अर्ब्स' (Urbs) और 'अरबनस' (Urbanus) से बना है जिसका अर्थ नगर (City) व इससे सम्बंधित घटनाएँ हैं। समान्य बोल-चाल की भाषा में नगर, सिटी, टाउन और मेट्रोपोलिटन तीनों के लिए प्रयोग किया जाता है।

नगरीय भूगोल में मुख्य रूप से नगरों के विभिन्न रूप, आकृति तथा विकास की कार्यों का अध्ययन किया जाता है। नगरों में अप्राथमिक (Non-Primary) कार्यों की अलग ही अधिक प्रधानता दी जाती है। दूसरे शब्दों में प्राकृतिक संसाधनों से प्रत्यक्ष सम्बंधित (कृषि इत्यादि) उपलब्धी को छोड़कर सभी क्रिया-कलाप, उद्योग व्यापार, शिक्षा, प्रशासन इत्यादि मानव क्रिया कलाप नगरों में सम्पादित किया जाता है।

वास्तव में नगरों का अध्ययन प्राचीन काल में केवल side and Location के आधार पर किया जाता था, परन्तु धिरे-2 इसका क्षेत्र बढ़ता गया। इसी के अनुकूल नगरों के रूप तथा परिभाषा में परिवर्तन आया। विशेषत: 20वीं शताब्दी में नगरीय भूगोल की विशेष प्रगति हुई। सर्वप्रथम 1907 में Kurlhass नामक जर्मन विद्वान ने Urban Geography को विकसित किया।

अत: विभिन्न विद्वानों ने नगरीय भूगोल की परिभाषा निम्न प्रकार से दी है:—

__ग्रिफिथ टेलर के अनुसार:__— "नगरीय भूगोल में नगर का बसाव, स्थान, प्रादुर्भाव, प्रारूप तथा वर्गीकरण का अध्ययन सम्मिलित है।"

__प्रो० गुरुदेव सिंह गोसल के अनुसार__ :(पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ के भूगोल वेत्ता) — "नगरीय भूगोल नगरीय स्थानों का भौगोलिक अध्ययन है। ये नगरीय स्थान अपने चारों ओर के प्रदेश के लिए सेवा केन्द्र के रूप में कार्य करते हैं। इसी प्रदेश के सहारे जीवित रहते हैं तथा इसी के लिए जन्म लेते हैं।"

SCOP OF URBAN GEOGRAPHY

नगरीय भूगोल का विषय क्षेत्र का अध्ययन इसके परिभाषा में निहित है। नगरीय भूगोल के विषय क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण बात है।

नगरों के पूर्ण इकाई अध्ययन क्षेत्र को दो स्वरूपों में बाँटा गया है।

क्षेत्र
- (1) भौतिक इकाई
  - (a) Location site and Situation
  - (b) Origin and Evaction
  - (c) Orbinaration of Distribution
- (2) कार्यात्मक इकाई तथा प्रादेशिक इकाई

1. भौतिक इकाई :-

(a) Location Site and Situation :→ इसके अन्तर्गत नगरों का Location यानी अक्षांशीय तथा देशान्तर विस्तार या धरातलीय तथा Situation या प्राकृतिक वातावरण का क्रमश: अध्ययन करते हैं। अक्षांश तथा देशान्तरीय विस्तार धरातलाकृति एवं वातावरण का अध्ययन करते हैं।

(b) Origin and Evaction :→ नगरीय भूगोल में हम नगर की उत्पत्ति एवं विकास का अध्ययन करते हैं कि अमुक नगरों की उत्पत्ति के पीछे क्या कारण है। किसी नगर की उत्पत्ति उद्योग के कारण, व्यापार के कारण, प्रशासनिक एवं धार्मिक कार्यों के कारण होता है। वास्तव में यहाँ ~~नग~~ नगरों के उत्पत्ति के सम्बंध में अध्ययन करते हैं। नगर की उत्पत्ति के साथ विकास का भी अध्ययन करते हैं। नगर के विकास आकार तथा विस्तार का असर पड़ता है।

(c) Orbimaration of Distribution :→ (नगरीकरण तथा वितरण) :→ नगरीय भूगोल में नगरीकरण तथा सन्न नगरों (नगरमाल) का अध्ययन करते हैं। नगरीकरण का प्रयोग जनसंख्या के सम्बंध में मिलता है। अत: इसमें प्रादेशिक विकास का भी अध्ययन होता है। नगरों के विकास होने पर अनेक उपनगरों का भी उत्पत्ति होती है। जहाँ जनसंख्या उद्योग का विकास होता है। नगरों की सन्न नगरों का अध्ययन नगरीय भूगोल में होती है।

2. कार्यात्मक तथा प्रादेशिक इकाई (Functional and Regional Units) :→ नगरीय भूगोल में नगर के कार्यों का विस्तृत अध्ययन करते हैं। वास्तव में नगर के द्वितीय या तृतीय (Secondary and Tertiary) का केन्द्र होता है। नगर में एक या अनेक केन्द्र बिन्दु होते हैं, जो नगर के अनेक भागों से सम्बंधित होते हैं। वास्तव में यह केन्द्र स्थल के आस-पास क्षेत्रों को अपने ओर आकर्षित करते हैं। अत: नगरीय भूगोल में नगरों के कार्यों की विस्तृत विश्लेषण अनेक संदर्भ में किया जाता है। यहाँ नगरों में किस कार्य की प्रधानता है, इसमें इसका अवलोकन किया जाता है। वास्तव में नगरीय भूगोल में नगर या नगरों का प्रभाव आस-पास के क्षेत्रों पर पड़ता है। अत: नगर का विकास एक प्रादेशिक केन्द्र के रूप में होता है, जिसका स्पष्ट प्रभाव उन्हें उसके Umland (प्रभाव क्षेत्र) पर पड़ता है। नगरों के एक प्रादेशिक इकाई के रूप में अध्ययन करते समय विभिन्न तत्वों पर ध्यान देते हैं। जैसे नगरीय आकारिकी (Morphology), भूमि उपयोग (Land use), सामाजिक एवं प्रादेशिक प्रतिरूप, यातायात के प्रतिरूप इत्यादी लक्ष्यों का अध्ययन नगर के प्रादेशिक इकाई के रूप में करते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि नगरीय भूगोल का विषय क्षेत्र नगर भौतिक कार्यात्मक तथा प्रादेशिक इकाई के रूप में अध्ययन करता है। अत: मेयर के शब्दों में — "नगरीय भूगोल का सम्बंध एक कार्यात्मक, प्रादेशिक तथा भौतिक इकाई के रूप में इकाई से है।"

Scanned with CamScanner